वाह री वाह! मैं भाग्यवान आत्मा
स्वयं भगवान् मेरे गुण गाता
मुझ पर महिमा के पुष्प बरसाता
वाह! वाह! कहकर मेरा स्वमान जगाता
द्वापुर से जो हम उनके मंदिर बनाते
वो हमें चैतन्य देवी -देवता बनाता
एक का लाख गुना इस जन्म में लौटाता
'मेरा बाबा' के रस्पोंस में अनगनित
बार
हमारी सेवा में सर्वेंट बन हाज़िर होता
मेरा जैसा खुशनसीब नही कोई
हाज़िर हज़ूर बन मेरे बुलाने पर हाज़िर हो जाता
मुझे स्नेह की गोदी में बैठाता, स्नेह के पाँव से
चलाता
अथक पुरुषार्थी बनाता,मेहनत से बचाता
विश्व का ताज़ पहनाता,पवित्रता की सौगात देता
त्याग के आगे भाग्य का गुणगान बड़ा
भाग्य विधाता स्वयं मेरा हो गया
भाग्य लिखनें की कलम मेरे हाथों दे दी
जो चाहूँ, जैसा चाहूँ भाग्य में अपना बानाऊँ
रचयिता बाप ,बीज रूप सृष्टि का मेरे हाथ
आगया
जो फल खाऊ, पूरा ही वृक्ष मेरा हो गया
वर्तमान, भविष्य दोनों में सुख भरमाया

वाह! मेरा परमपिता 'शिव बाबा'
किया स्वीकार उसने मुझे दिल से
वारी जाऊँ तन-मन-धन, मन-वाणी-कर्म से
हर श्वांश ,हर संकल्प में हो बस उसका ही नाम
सहयोगी बनूँ, हर कर्म करूँ उनको समर्पण
स्वयं को बदलूँ देख कर ज्ञान दर्पण
हाथों से छूटे न श्रीमत के पक्की लगाम
करूँ विश्व में बाप का ऊँचा नाम
वाह रे ! मैं आत्मा भाग्यवान
वाह रे! मेरे परमपिता परमात्मा शिवाचार्य
सिखाया राजयोग बनाया हमें भी ब्रह्माचार्य

ॐ शांति!!
वाह मेरे बाबा वाह!!